दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)

8 Test

टेस्ट-III (प्रश्नपत्र-2)

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

DTVF/19 (J-S)–M–HL3

Name: Sumit kumar Pandey **Mobile Number:** _____

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** FP/July-19/822

Center & Date: 01-08-2019 **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: 0847994

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशत: दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित काव्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) रोई गँवाए बारह मासा। सहस सहस दुख एक एक साँसा।

तिल तिल बरख बरख परि जाई। पहर पहर जुग जुग न सेराई।।

सो नहिं आवै रूप मुरारी। जासों पाव सोहाग सुनारी।।

साँझ भए झुरि झुरि पथ हेरा। कोनि सो घरी करैं पिउ फेरा?।।

दहि कोइला भइ कंत सनेहा। तोला माँसु रही नहिं देहा।।

रकत न रहा, विरह तन गरा। रती रती होइ नैनन्ह ढरा।।

पाय लागि जोरै धन हाथा। जारा नेह, जुड़ावहु नाथा।।

बरस दिवस धनि रोह कै, हारि परी चित झोंखि।

मानुष घर घर बूझि कै, बूझै निसरी पंखि।।

संदर्भ और प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ मलिक मुहम्मद जायसी की रचना पद्मावत से ली गई है। उक्त पंक्तियों के माध्यम से नागमती रानी के विरह का सूक्ष्म चित्रण किया जा रहा है।

व्याख्या

नागमती रानी, राजा रत्नसेन के वियोग में एक-एक पल बहुत ही कठिनाई से काट रही हैं। एक-एक क्षण उन्हें एक युग के बराबर लग रहा है। अपने प्रियतम की राह देखते-देखते रानी सुबह से शाम तक बैठी रहती हैं। उनका शरीर सूखकर कांपले जैसे हो गया है, शरीर बस अब हड्डी का एक ढाँचा रह गया है। रानी हाथ जोड़कर प्रभु से प्रार्थना कर रही हैं कि उन्हें उनके प्रियतम से मिलवा दे। बारह महिने उन्होंने रो-रो कर गुजार दिए हैं। जो व्यक्ति इस विरह-वेदना से गुजरा है, वही उनके दुख को समझ सकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काव्यगत सौन्दर्य

→ रानी का विरह वर्णन एक सामान्य नारी की ~~भाँति~~ तरह है। यह रानीपन नही नारीपन है।

→ पुनरावृति अलंकार का प्रयोग
↓
सहस-सहस, तिल-तिल

→ कई सारे वर्णों में अनुप्रास अलंकार है।

→ प्रश्नवाचक शैली का सुन्दर प्रयोग हुआ है।
↓
कौनि सो धरी करैं पिउ फेरा ?

→ अवधी भाषा, जिसमें लोक प्रचलित शब्दों के भी दर्शन होते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) दूर करहु बीना कर धरिबो।

मोहे मृग नाहीं रथ हाँक्यो, नाहिंन होत चंद को ढरिबो।।

बीती जाहि पै सोई जानै कठिन है प्रेमपास को परिबो।

जब तें बिछुरे कमलनयन, सखि, रहत न नयन नीर को गरिबो।।

सीतल चंद अगिनि सम लागत कहिए धीर कौन विधि धरिबो।

सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस बिनु सब झूठो जतननि को करिबो।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ व प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा संकलित सुर-ग्रन्थावली से ली गई हैं। इसमें गोपियों के विरह का अति मार्मिक चित्रण किया गया है।

व्याख्या

श्री कृष्ण अब वृन्दावन (ब्रज) की जगह मथुरा में रहने लगे हैं। गोपियाँ उनके वियोग में पागल हुई जा रही हैं। राधा के विरह को दूर करने के लिए गोपियों ने वीणा बजाना शुरु किया, जिससे चन्द्रमा को ढोने वाले मृग मुग्ध होकर रुक गए और रात भम्बी हो गई। राधा वीणा को रख देने के लिए कहती हैं। वे कहती हैं कि जब से कमलनयन (अर्थात श्री कृष्ण) उन्हें छोड़ के गए हैं तब से उनके आँख पानी से भरे रहते हैं। शीतल चन्द्रमा भी आग्नि की भाँति प्रतीत होता है। श्री कृष्ण के दर्शन के बिना चैन नहीं मिलता।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काव्यगत सौन्दर्य

→ इस विरह वर्णन में प्रकृति भी साझीदार है। चन्द्रमा अग्नि की भाँति प्रतीत होने लगा है।

→ उपमा अलंकार
↓
कमलनथन

→ चन्द्रमा का मानवीकरण
↓
मृग हाँक कर ले जा रहे हैं.

→ भाषा — ब्रज

→ दृश्य बिम्ब
↓
माँह मृग नाहिं रथ हाँक्यो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि।

तज्यौ मनौ तारन-बिरदु बारक बारनु तारि।।

सन्दर्भ व प्रसंग

उक्त पंक्तियाँ डॉ. श्यामसुन्दर दास द्वारा संकलित बिहारी - सतसई से ली गई हैं। बिहारी के अन्य दोहों से अलग यह भक्ति का दोहा है।

व्याख्या

बिहारी प्रभु से शिकायत के लहजे में कहते हैं कि हे प्रभु, आपने मेरे गुहार को ऐसे अनसुना कर रखा है मानो आप एक गज (हाथी) के उद्धार से थक गए हैं और आपने बाकी भक्तों पर कृपा करना छोड़ दिया है।

काव्यगत सौन्दर्य

→ बिहारी के विषय - वैविध्य का उदाहरण (भक्ति - दोहा)
→ समाहार शक्ति
(इतनी छोटी पंक्ति में बहुत सारी बातें कह दी गई हैं)
→ ब्रज भाषा
→ "त" में अनुप्रास अलंकार

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भू-धर ज्यों ध्यान-मग्न, केवल जलती मशाल।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ व प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ सुर्यकान्त त्रिपाठी "निराला" की रचना राम की शक्ति पूजा से ली गई है। राम-रावण युद्ध के दौरान शाम को वापस लौटते समय पराजय की आशंका से हतोत्साहित राम और उनकी सेना के मनोबल को दर्शाने हेतु प्रकृति का वर्णन किया गया है।

व्याख्या

युद्ध के दौरान रावण की सेना श्री राम की सेना पर भारी पड़ रही है। इससे श्री राम का मनोबल नीचे जा चुका है। रात के गहन अंधेरे में रास्ता नहीं सुझ पड़ता, हवा भी जैसे रुक सी गई है, बादल गरज रहे हैं, इस स्तब्ध सन्नाटे में आशा की बस एक किरण कहीं धुंधली सी दिखाई देती है।

काव्यगत सौन्दर्य

1. प्रकृति वर्णन की सहायता से प्रभु श्री राम के मनोवृत्तियों को दिखया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. बिम्ब का सुन्दर वर्णन (श्रव्य)
"अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल"

3. भाषा संस्कृतनिष्ठ है।

4. "म" में अनुप्रास अलंकार

5. आकाश का सजीवीकरण
↓
उगलता गगन घन अंधकार

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) आनन्ददात्री शिक्षिका है सिद्ध कविता-कामिनी,
है जन्म से ही वह यहाँ श्रीराम की अनुगामिनी।
पर अब तुम्हारे हाथ से वह कामिनी ही रह गई,
ज्योत्स्ना गई देखो, अँधेरी यामिनी ही रह गई!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ व प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ मैथिलीशरण गुप्त की रचना "भारत-भारती" से ली गई हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से भारत में व्याप्त कमियों को वर्णित किया जा रहा है, जिन्हें सुधारकर भारत एक महान राष्ट्र बन सकता है।

व्याख्या

मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं कि कविता-कामिनी आनन्द प्रदान करने वाली शिक्षिका की तरह है। वर्षों से उसे भारतवर्ष में श्रीराम के अनुयायी की भाँति माना और पूजा गया है। परन्तु अब उस कविता-कामिनी का बस ~~अब~~ कामिनी मात्र हमारे पास रह गया है। यही कारण है कि भारतवर्ष में हर तरफ अब अंधेरा दिखाई देता है। उजाला कहीं गायब हो गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काव्यांश सौन्दर्य

→ भारत की वर्तमान निराशाजनक स्थिति का वर्णन किया जा रहा है।

→ कविता - कामिनी उन सभी चीजों का बोधक है, जो भारतीय संस्कार और अस्मिता का प्रतीक है।

→ भाषा - संस्कृतनिष्ठ है।

→ "क" इत्यादि में अनुप्रास अलंकार

→ प्रतीक का सुन्दर प्रयोग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'सूरसागर में वर्णित गोपियों का विरह बैठे-ठाले का धंधा है।' इस अभिमत के पक्ष या विपक्ष में अपना तार्किक मत प्रस्तुत कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सूरसागर में गोपियों का विरह वर्णन आलोचकों में हमेशा से मतभेद का विषय रहा है। आलोचक जैसे कि शुक्ल जी गोपियों के विरह वर्णन में आत्मीयता / भावना नहीं देख पाते वहीं वृद्ध अन्य आलोचक जैसे कि शान्तिप्रिय द्विवेदी को गोपियों का विरह ठीक वैसे ही लगता है जैसे कि रानी नागमती का या सीता का।

पहले प्रथम मत पर विचार करते हैं। गोपियों का विरह बैठे-ठाले का धंधा क्यों है? श्री कृष्ण गोपियों से कुछ दूर नहीं हैं। मथुरा और ब्रज की दूरी पैरों से मापी जा सकती है। श्री-कृष्ण के जीवन की हर-खबर गोपियों को मिलती रहती है। गोपियों को पता है कि श्री-कृष्ण को कुब्जा से लगाव है या फिर उन्होंने

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कंस को मार दिया है। ऐसे समय में गोपियों का विरह तर्कसंगत जान नहीं पड़ता। या कम से कम सीता या नागमती के विरह के तुल्य तो कतई नहीं है जहाँ दोनों को अपने प्रियतम के बारे में एक इंच मात्र भी जानकारी नहीं है।

श्री कृष्ण ने अपना नाम भी गोपाल रख दिया है। जिसका मतलब है गोपियों का रखवाला। गोपियों का श्री-कृष्ण से लगाव आत्मीय-स्तर की उस चरम भूमि को नहीं छू पाता जो सीता की विरह-वेदना छू पाती है।

अब दूसरे पक्ष पर विचार करते हैं। विरह-वेदना प्रियतम से इसी पर निर्भर नहीं करती। पास होकर भी न मिल पाने का दुख उतना ही गहरा हो सकता है जितना दूर रहकर। इसलिए ब्रज और मथुरा की नजदीकी के आधार पर गोपियों

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की विरह वेदना को नकारा नहीं जा सकता। दूसरा जैसे कि डॉ. मैनेजर पाण्डेय ने सूरदास की गोचारण परंपरा में जिक्र किया है कि बचपन में साथ में खेलने, रहने व बिताये दिनों की याद सख्य तथा दाम्पत्य दोनों रूपों में विद्यमान है जो गोपियों की विरह वेदना को तीव्र करती है और इसे मार्मिक बनाती है।

समग्रतः, यह सच है कि सीता और नागमती का विरह गोपियों की तुलना में अधिक विश्वसनीय लगता है। यह भी सच है कि गोपियों का विरह बहुत सारे व्यक्तियों में बँटा हुआ है लेकिन इसका ये मतलब कतई नहीं है कि गोपियों का विरह बैठे ठाले का धंधा है। सूरदास के पास आलम्बन व विषय की कमी के कारण उन्होंने भले ही इस विरह को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत कर दिया हो परन्तु गोपियों का विरह भी कम वेदनापूर्ण नहीं है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) क्या कबीर की काव्य-भाषा काव्यात्मकता की कसौटी पर खरी उतरती है? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कबीर जन-सामान्य के कवि हैं। कई मायनों में वो एक कवि भी नहीं है एक भक्त हैं, और एक भक्त की रचनाओं की भाषा की जाँच जब अभिजात्यता इत्यादि की खोज में की जाएगी तो निराशा ही हाथ लगेगी।

परन्तु जब हम कबीर की भाषा की पहचान उनके जन-सामान्य के कवि के रूप में कर लेते हैं तो वो भाषा के बेताज बादशाह नजर आने लगते हैं।

उनकी भाषा आम-जन की भाषा है

"ढाइ आखर प्रेम का पढ़े
सो पण्डित होई"

उनकी भाषा सूफ़ीज्म से भी प्रभावित दिखती है।

"हमारा यार है हममें
हमन को इंतजारी क्या"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उनकी भाषा में विभिन्न उपभाषाओं और बोलियों का अद्भुत मिश्रण उसे अत्यन्त ही सुग्राह्य बना देता है।
जैसे पंजाबी मिश्रित हिन्दी का एक उदाहरण

" बरस्या बादर प्रेम का
भीज गया सब अंग "

नवीन प्रतीक तथा शब्दों के चयन में कबीर का कोई सानी नहीं है।

— " मैं कुत्ता राम का
मुतिया मेरा नाउ "

अब कुत्ते के नाम के रूप में मुतिया को ही लिजिए। आचार्य द्विवेदी कहते हैं कि मुतिया नाम है बड़ा जानदार, कुत्ते की सारी निरीहता मानो दृग हिलाती हुई सामने आकर खड़ी हो जाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

समग्रतः कहा जा सकता है कि कबीर भले ही अभिजात्यता की कसौटी पर भाषा के क्षेत्र में श्रेष्ठ साबित न हों पर जन सामान्य की दृष्टि से वे भाषा के डिक्टेटर हैं जैसा कि आचार्य द्विवेदी ने भी माना है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जायसी और कबीर के रहस्यवाद की तुलना कीजिये।

जायसी और कबीर का रहस्यवाद

रहस्यवाद जायसी और कबीर दोनों की रचनाओं में जगह जगह देखने को मिलता है। दोनों के रहस्यवाद में प्रेम एक प्रमुख तत्व के रूप में विद्यमान रहा है। दोनों एक दिव्य सत्ता के साथ सम्बन्ध स्थापित करने की बात करते हैं।

परन्तु दोनों के रहस्यवाद में कुछ विषमतायें भी हैं।

(1) कबीर चूंकि हठयोग से सम्बन्धित रहे थे, उनका रहस्यवाद मूलतः साधनात्मक रहस्यवाद है, वहीं इसरी तरफ जायसी का रहस्यवाद भावनात्मक रहस्यवाद है।

↓

"जोगि जोति जोति निरमई"

— जायसी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(2) कबीर के रहस्यवाद में स्त्री का जिक्र नहीं आता जबकि जायसी लौकिक प्रेम से अलौकिक प्रेम की यात्रा तय करते हैं।

"लाली मेरे लाल की जित देखूँ तित लाल
लाली देखन मैं गई मैं भी हो गई लाल"

— कबीर

"फूल मरै पै मरै न बासू"

— जायसी

(3) कबीर का रहस्यवाद जगत को माया मानता है, जायसी का रहस्यवाद जगत को भी सत्य मानता है।

"पुरा कुंभ जल-जल ही समाना
इहै तथ कहै ज्यानी"

— कबीर

(4) कबीर का रहस्यवाद और जायसी का रहस्यवाद दोनों एक निर्गुण ब्रह्म पर जाकर मिल जाते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) पद्मावत अन्योक्तिपरक अर्थ धारण करने वाली रचना है या समासोक्तिपरक? विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

पद्मावत अन्योक्ति या समासोक्ति है - इस बात पर विचार करने से पहले यह जान लेना आवश्यक है कि अन्योक्ति और समासोक्ति का मतलब क्या है।

अन्योक्ति एक ऐसी रचना होती है जिसमें प्रस्तुत अर्थ गौण होता है जबकि अप्रस्तुत अर्थ की महत्ता ज्यादा होती है। समासोक्ति में प्रस्तुत अर्थ ही महत्वपूर्ण होता है परन्तु अप्रस्तुत अर्थ भी थोड़ा बहुत मात्रा में विद्यमान होता है।

अब पद्मावत को देखते हैं। प्रस्तुत अर्थ के सन्दर्भ में यह राजा रत्नसेन और रानी नागमती की कहानी है, जिसके बीच में रानी पद्मावती एक महत्वपूर्ण किरदार बनकर आती है, राजा रत्नसेन और रानी पद्मावती के मिलन और फिर अलाउद्दीन खिलजी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

के आगमन के साथ रानी पद्मावती के लिए युद्ध में सभी का स्वर्ग सिधार जाना यही कहानी का सार-तत्व है। कहा जा सकता है कि हमें प्रस्तुत कहानी को समझने में कोई परेशानी नहीं होती।

अब अप्रस्तुत कहानी के रूप में हमें रानी पद्मावती को अलौकिक प्रेम तक ले जाने वाले एक रास्ते के रूप में देखना पड़ता है। राजा रत्नसेन के प्रेम को इश्कमज़ाजी से इश्कहकीकी तक के सफर के रूप में मानना पड़ेगा। पद्मावत के कई-कई जगहों पर यह सत्य भी प्रतीत होता है, परन्तु कई जगहों पर हमें केवल प्रस्तुत कथ्य ही मिलती है। वैसे ही रानी नागमती को माया मान लेना कहीं से भी तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता, जिसे छोड़कर राजा रत्नसेन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रानी पद्मावती (अर्थात परम ब्रह्म) की तलाश में है। अगर ऐसा होता तो रानी पद्मावती को प्राप्त करने के बाद राजा रत्नसेन रानी नागमती (अर्थात माया) के पास नहीं आता।

इस सन्दर्भ में यह समझना भी अत्यन्त आवश्यक है कि मलिक मुहम्मद जायसी तथा अन्य सूफ़ी कवि रहस्यवाद का प्रयोग तो करते थे परन्तु उनके कथानकों का आधार लोक-कहानी ही हुआ करते थे। इससे एक बात स्पष्ट होती है कि जायसी प्रस्तुत कथा को ही महत्व देना चाहते थे। और दूसरी तरफ जब हमें अप्रस्तुत कथा को जगह-जगह खोजना पड़े तो कथित को अन्योक्ति तो बिल्कुल ही नहीं कहा जा सकता, हाँ यदि अन्योक्ति और समासोक्ति में किसी एक को चुनना ही पड़े तो समासोक्ति ज्यादा बेहतर विकल्प है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) ''ब्रह्मराक्षस' कविता बिंब-निर्माण में नवीनता का परिचय देती है।' इस मत के परिप्रेक्ष्य में 'ब्रह्मराक्षस' कविता की बिंब-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्रह्मराक्षस मुक्तिबोध की एक अत्यन्त प्रसिद्ध रचना है। इसमें फैंटसी शिल्प का प्रयोग किया गया है, जिसमें बिम्ब-योजना का प्रयोग लगभग आवश्यक हो जाता है। और ब्रह्मराक्षस भी इसका कोई अपवाद नहीं है।

दृश्य बिम्ब

"बावड़ी को घेर डाले खूब
उलझी है
खड़े हैं मौन औदुम्बर"

श्रव्य बिम्ब

"शुद्ध संस्कृत गालियों का ज्वार
या कोई क्रुद्ध मंत्रोच्चार"

या फिर

"बाँह छाती मुँह छपाछप"

गतिमान बिम्ब

"एक चढ़ना औ उतरना
पुन: चढ़ना फिर उतरना"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सांश्लिष्ट बिम्ब

मुक्तिबोध ने कहीं-कहीं दो या अधिक बिम्बों का प्रयोग एक साथ भी किया है जो उनकी बिम्ब-निर्माण की क्षमता का परिचायक है।

अंधेरी सिढ़ीया — (दृश्य)
उस से गुजरती
गरजती आंदोलिता → (श्रव्य)"

ब्रह्मराक्षस का बिम्ब सामान्य बिम्ब नहीं है। चन्द्रमा और सूर्य को ब्रह्मराक्षस का शिष्य बताने, नमस्कार करने जैसे दृश्य या फिर ब्रह्मराक्षस के क्रियाकलापों का वर्णन न केवल आँखों के सामने से गुजरता हुआ प्रतीत होता है, बल्कि नवीन बिम्ब निर्माण की प्रक्रिया से हमारा परिचय भी कराता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) सूर के काव्य में निहित वक्रता और वाग्विदग्धता पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सूर का काव्य निहित वक्रता और वाग्विदग्धता के लिए जाना जाता है। गोपियों और उद्धव का संवाद इसका बेहतरीन उदाहरण है।

(1) हरि है राजनीति पढ़ी आए
↓
जहाँ गोपियाँ श्री कृष्ण पर भी कटाक्ष करने से नहीं चुकती

या फिर

(2) "आपने केलि करत कुब्जा संग हमहि सिखावत जोग"
↓
जहाँ वे श्री कृष्ण को उलाहना देती है।

(3) या फिर पूरे मथुरा पे उनका क्रोध
"मथुरा काजल की कोठरी जे आवहिं ते कारे"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(4) उद्धव पर कटाक्ष

"गुन ज्ञान खेप की
ब्रज में आन उतारी"

सभी सूर के काव्य में निहित वक्रता और वाग्विदग्धा को उजागर करते हैं। इसी विशेषता के कारण उद्धव-गोपी संवाद हिन्दी साहित्य की अत्यन्त महत्वपूर्ण धरोहर है। इसी के माध्यम से सूरदास ने सगुण प्रेम का महत्त्व प्रतिस्थापित किया है यही वक्रता और वाग्विदग्धता काव्य को सरस और रोचक बनाती है, जिसके बिना उद्धव-गोपियों का इतना लम्बा संवाद शायद जन-सुग्राह्य न हो पाता। इसी विशेषता के कारण सूरदास को वक्रता का जनक कहा जाता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित काव्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) नैनाँ अंतरि आचरूँ, निस दिन निरषौं तोहि।

कब हरि दरसन देहुगे, सा दिन आवै मोंहि॥

सन्दर्भ व प्रसगं

प्रस्तुत पंक्तियाँ कबीर ग्रन्थावली के 'विरह को अंग' नामक भाग से ली गई हैं। कबीर प्रभु के दर्शन न हो पाने के दुख का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या

कबीर कहते हैं कि हे प्रभु ~~कि~~ आप कब दर्शन दोगे, वह दिन कब आएगा। आपके दर्शन के लिए आकुल मेरी आँखे वर्षा की भाँति निरन्तर जल प्रवाहित करती रहती हैं।

काव्यगत सौन्दर्य

(1) भाषा- पंचमेल खिचड़ी
(लोक-भाषाओं का मिश्रण)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(2) "न", "द" इत्यादि में अनुप्रास अलंकार

(3) आँसू की तुलना बरसात से की गई है।

(4) कबीर के एक भक्त - कवि होने की पुष्टि होती है। प्रभु के साथ ऐसा भावात्मक लगाव एक भक्त - कवि ही रख सकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this spa

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि अँधियारी।
मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी।
पुरबा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ व प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ मलिक मुहम्मद जायसी की रचना पद्मावत से ली गई हैं। यहाँ रानी नागमती के विरह - वेदना को वर्णित किया जा रहा है।

व्याख्या

रत्नसेन की राह देखते - देखते भाद्रपद मास आ चुका है। भाद्रपद की अंधेरी रात काटे नहीं कटती है, बिस्तर काटने को दौड़ता है, हृदय लगता है कि अब फट जाएगा, जैसे ही बिजली चमकती है, विरह वेदना चार गुनी बढ़ जाती है। जैसे - जैसे बारिश की बूँदें गिरती हैं, वैसे - वैसे रानी के आँसू भी गिरते रहते हैं। पूरबी हवा के चलने से रानी का शरीर झुलस गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this spa

काव्यात सौन्दर्य

(1) यह रानीपन नहीं नारीपन का वर्णन किया गया है। आचार्य शुक्ल इसे अद्वितीय वस्तु कहते हैं।

(2) रानी के इस विरह वर्णन में प्रकृति भी साझीदार है।

(3) "भ", "प" इत्यादि में अनुप्रास अलंकार

(4) उपमा
सेज की उपमा नाग से

(5) प्रतीक
↓
रानी के विरह को कई आलोचकों ने मानव के अल्लाह के प्रति विरह के समानार्थी माना है।

(6) भाषा - अवधी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) रघुनायक आगे अवनी पर नवनीत-चरण,
श्लथ धनु-गुण है, कटिबन्ध स्रस्त-तूणीर-धरण,
दृढ़ जटा-मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल
फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर, विपुल
उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार,
चमकतीं दूर ताराएँ ज्यों हो कहीं पार।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ व प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की रचना 'राम की शक्ति-पूजा' से ली गई हैं। युद्ध के एक शाम का हतोत्साहित श्री राम के मनोभावों का वर्णन यहाँ किया जा रहा है।

व्याख्या

रघुनायक आगे चल रहे हैं, उनके पीछे पूरी सेना। उनके बाल बिखरे हुए हैं, चेहरे पर तेज नहीं है। बाणों में शक्ति नहीं रह गई है। ऐसा लगता है जैसे किसी कठिन पहाड़ पर गहन अंधकार उतर आया हो और रोशनी की एक हल्की किरण भी दूर-दूर तक नजर न आ रही हो।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

काव्यगत सौन्दर्य

(1) राम का मानवीकरण
— प्रभु श्री राम लीला कर रहे हैं।

(2) राम के मनोभाव की तुलना अंधकार से की गई है।

(3) भाषा संस्कृतनिष्ठ है।

(4) बिम्ब - "फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर"

(5) कई बातें प्रतीक रूप में कही गई हैं।
जैसे — चमकती दूर तारापें
का अर्थ है कि आशा की किरण दूर-दूर तक नहीं दिखाई दे रही।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) जिन श्रेष्ठ सौधों में सुगायक श्रुति-सुधा थे घोलते,
निशि-मध्य, टीलों पर उन्हीं के आज उल्लू बोलते!
"सोते रहो हे हिन्दुओ! हम मौज करते हैं यहाँ,"
प्राचीन चिह्न विनष्ट यों किस जाति के होंगे कहाँ?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ व प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ मैथिलीशरण गुप्त की रचना "भारत - भारती" से ली गई हैं। यहाँ कवि भारत की वर्तमान दयनीय स्थिति को वर्णित कर रहा है।

व्याख्या

कवि कहता है कि अतीत में जहाँ से अमृत सी आवाजें आती थी वहाँ आज उल्लू बोल रहे हैं। वे कटाक्ष करते हुए हिन्दू जाति से कहते हैं कि आप लोग यहाँ मौज करते रहो जिससे कि हमारी प्राचीन गरिमा नष्ट हो जाए। यह नुकसान भी आखिर हमारा ही होगा, किसी और जाति का नहीं।

काव्यगत सौन्दर्य

1. भारत की वर्तमान दयनीय स्थिति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

का भारत का सजीवीकरण करके वर्णन किया गया है।

२. "हिन्दु - जाति"

का जिक्र गुप्त जी के भारत-भारती की एक महत्वपूर्ण सीमा है।

3. भाषा संस्कृतनिष्ठ है।

४. "स" इत्यादि में अनुप्रास अलंकार

5. बिम्ब (संश्लिष्ट)

"टीलों पर उन्हीं के आज उल्लू बोलते"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) मेरे हार गए सब जाने-माने कलावंत,
सबकी विद्या हो गई अकारथ, दर्प चूर,
कोई ज्ञानी गुणी आज तक इसे न साध सका।
अब यह असाध्य वीणा ही ख्यात हो गई।
पर मेरा अब भी है विश्वास
कृच्छ-तप वज्रकीर्ति का व्यर्थ नहीं था।
वीणा बोलेगी अवश्य, पर तभी।
इसे जब सच्चा स्वर-सिद्ध गोद में लेगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ व प्रसगं

प्रस्तुत पंक्तियाँ अज्ञेय की रचना "असाध्य-वीणा" से ली गई हैं। कवि वीणा को न साध पाने की असफलता को वर्णित कर रहा है साथ ही भविष्य में उस व्यक्तित्व को भी दर्शा रहा है, जो इस वीणा को साध पाने में सफल होगा।

व्याख्या

असाध्य-वीणा को साधने में बहुत सारे व्यक्तियों को असफलता हाथ लगी। सबका भ्रम दूर हो गया। वज्रकीर्ति द्वारा रचित इस वीणा को साधना इतना आसान नहीं है, इसे तो तब ही

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

साधा जा सकेगा जब इसे कोई सम्पूर्ण व्यक्तित्व वाला व्यक्ति गोद में लेगा।

काव्यगत सौन्दर्य

1. यह कविता जापान की "टेमिंग ऑफ द हार्प" पर आधारित है।
2. शून्यवाद का महत्व प्रतिपादित किया गया है।
3. वीणा का सजीवीकरण
   "वीणा बोलेगी अवश्य"
4. बहुत सी बातें प्रतीक के रूप में कही गई हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) कबीर के काव्य की प्रासंगिकता पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर आम लोगों के कवि हैं, कवि क्या हैं - जनसामान्य के विचारों को आवाज देने वाले जन-नेता हैं। लोगों के विचार उनकी संवेदना को समझने और व्यक्त करने में कबीर से माहिर कवि हिन्दी साहित्य जगत में कोई दूसरा नहीं हुआ है। जाहिर सी बात है कि ऐसे व्यक्तित्व की कोई रचना बिना प्रासंगिक हुए नहीं रह सकती।

(1) सांप्रदायिकता

हिन्दु - मुस्लिम के बीच मतभेद आज के भारत की हकीकत है। 2002 का गोधरा हो या 2013 का मुज्जफरनगर आए दिन दोनों दलों के बीच हिंसक झड़पों की खबरे आती ही रहती हैं। कबीर ने इस तथ्य को बहुत पहले ही पहचान लिया था। उन्होंने दोनों के कुरीतियों पर जबरजस्त प्रहार किया और दोनों में एक समता स्थापित करने की कोशिश की।

(1) "आसे तो चाकी भली पिस खाय संसार"
(2) " ता चढ़ मुल्ला बाँग दे क्या बहरा हुआ खुदाय "

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(2) भाषा

कबीर के भाषा के स्तर पर उनकी प्रासंगिकता दिखी हुई है। वे हमेशा से जन- सामान्य भाषा में रचना करते थे। आज जब अँग्रेजी का वर्चस्वीकरण बढ़ता जा रहा है। मातृभाषा की महत्ता स्थापित करने का प्रयास कबीर के कविताओं की पुकार है।

(3) प्रेम

भीड़-भाड़ भले इस आधुनिक युग में प्रेम की आवश्यकता को कबीर से बेहतर कोई और नहीं समझ सकता

" ढाई आखर प्रेम का
पढ़े सो पंडित होय "

(4) भ्रष्टाचार

आज जरूरत से अधिक संपत्ति एकत्रित करने की जैसे जंग छिड़ी हुई है। ऐसे समय में कबीर की न्यूनतम धन एकत्रित करने की इच्छा प्रासंगिक हो उठी है।

" मैं भी भूखा न रहूँ
साधु न भूखा जाय "

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(5) पशुओं की सुरक्षा

कबीर पशुओं के जीवन को मानव जीवन के समकक्ष मानते थे। विलुप्त होते जीव-जन्तुओं के संरक्षण की वकालत कबीर कब से करते आ रहे हैं।

"दिन को रोजा रखत हो
रात हनत हो गाय"

इसके अलावा भी दलितों के उत्थानीकरण, सद्भाव तथा सदाचार, हिंसा, मानवतावाद इत्यादि से संबंधित उनके दोहे आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उस समय थे। और जब तक इन समस्याओं को सुलझा नहीं लिया जाता भविष्य में भी ये प्रासंगिक बने रहेंगे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'जनसाधारण की सहज भावनाओं, समस्याओं से लेकर सामान्य जनजीवन तक की अभिव्यक्ति करती हुई नागार्जुन की कविता विशिष्ट व उदात्त की उपेक्षा व साधारण के प्रति प्रतिबद्धता की मिशाल पेश करती है।' इस मत से आप कहाँ तक सहमत हैं? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर के बाद जन साधारण के भावनाओं, समस्याओं को लिखने वाला अगर कोई दूसरा कवि हुआ है तो वो नागार्जुन ही हैं।

वे स्वयं ही खुद को जनकवि मानते हैं

"रोता हूँ लिखता जाता हूँ
कवि को बेकाबू पाता हूँ"

या फिर

"लोग पूछ रहे हैं क्या बतलाऊँ
जन कवि हूँ साफ कहूंगा क्यों हकलाऊँ"

उनकी जन सामान्य के प्रति प्रतिबद्धता को बयान करती है।

जन समस्याओं को दर्शाने के लिए वे मार्क्सवाद तक को चुनौती दे देते हैं।

"माओ - माओ नहीं हम चिल्लाएंगे
दाल - भात - तरकारी जब-तक पेट भर नहीं खाएंगे"

जनता की भावनाओं को सत्ता तक पहुँचाने के लिए वे प्रधानमंत्री तक से लड़ सकते हैं।

"इंदू जी, इंदू जी क्या हुआ है आपको
भूल गईं हैं बाप को"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता को नागार्जुन से बेहतर कोई नहीं दर्शा सका।

" नंगे चीथड़े डाले हम डोले वन-वन में
तुम रेशम के साड़ी डाले उड़ती फिरो गगन में "

गरीबी और भूखमरी उनकी कविताओं का एक प्रमुख हिस्सा है।

"कई दिनों तक चूल्हा रोया
चक्की रही उदास "

निम्न वर्ग के प्रति किए जा रहे ज्यादती उनके कविताओं में क्रोध के रूप में फूटकर बाहर आते हैं।

" ऐसा तो पहले कभी नहीं हुआ था
जब सोलह के सोलह
अभागे अकिंचन मनुष्य "
।

कहा जा सकता है कि नागार्जुन की कविता जन सामान्य की समस्याओं और भावनाओं को प्रदर्शित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हालाँकि इसका ये कतई मतलब नहीं है कि उनकी कविता विशिष्ट व उदात्त की उपेक्षा करती है।

" हम चलेंगे साथ दूर तक
भारत के भविष्य की तरफ "

जैसी पंक्तियाँ सबको साथ लेकर चलने की बात तो करती ही हैं। दरअसल मशला सिर्फ इतना सा है कि नागार्जुन तथाकथित पिछड़े लोगों को भी उस बराबरी का हक दिलाना चाहते हैं जिसके वे हकदार हैं। इस कारण उनकी कविताएँ जन साधारण की तरफ ज्यादा झुकी हुई हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) ''ब्रह्मराक्षस' अस्तित्ववादी मान्यताओं और खंडित व्यक्तित्व का प्रतीक है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्रह्मराक्षस मुक्तिबोध की एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण रचना है। श्रीकान्त वर्मा के अनुसार मुक्तिबोध खुद ही ब्रह्मराक्षस है तथा उसके शिष्य भी है।

ब्रह्मराक्षस आत्मचेतस व विश्वचेतस के बीच उलझ कर रह गया है -- आत्मचेतस

विश्वचेतस बे-बनाव "

यह उसके व्यक्तित्व को खंडित कर रही है। वह न तो स्वयं एक अच्छी ज़िन्दगी जी पा रहा है और न ही समाज के लिए स्वयं को समर्पित कर पा रहा है। और इस पूरी प्रक्रिया में अस्तित्ववादी मान्यता उसके राह का सबसे बड़ा रोड़ा है अस्तित्ववादी मान्यता है कि समाज को समर्पित व्यक्तित्व अपनी वैयक्तिकता खो देता है, जबकि वास्तव में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ऐसा है नहीं। ब्रह्मराक्षस का शिष्य इसी बात पर पछतावा करता है कि अगर आज ब्रह्मराक्षस जिन्दा होता तो वह उसे समाज और व्यक्तित्व को साथ ले जाने की कला से अवगत करता।

ब्रह्मराक्षस अपने व्यक्तित्व को बचाए रखने की पूरी कोशिश भी करता है परन्तु समाज से अलग व्यक्तित्व का भी कोई महत्व नहीं। अन्ततः वह अपने प्राण त्याग देता है।

"कोठरी में वह अपना गणित करता रहा व मर गया"

ब्रह्मराक्षस की समस्या

दरअसल प्रत्येक मध्यवर्गीय व्यक्ति की समस्या है। एक तरफ तो अस्तित्ववादी मान्यताओं को साथ ले कर चलने का दबाव है तो वहीं दूसरी तरफ आधुनिक सुख-सुविधाओं की चाह। इन दोनों पक्षों के बीच पिसता

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

हुआ इंसान एक खंडित व्यक्तित्व मात्र बनकर रह जाता है जैसा ब्रह्मराक्षस के साथ देखने को मिलता है।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't wri anything in this s

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'असाध्य वीणा' कविता का संदर्भ लेते हुए 'व्यक्ति और समाज' के अंतर्संबंध के संबंध में अज्ञेय के विचारों का अन्वेषण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation